International Journal of Humanities and Education Research
www.humanitiesjournal.net
Online ISSN: 2664-9802, Print ISSN: 2664-9799
Received: 12-09-2019, Accepted: 09-10-2019, Published: 16-10-2019
Volume 1, Issue 2, 2019, Page No. 25-29

हिंदी पत्र–साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ॰ जसवीर त्यागी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी–विभाग, राजधानी कॉलेज, राजा गार्डन, दिल्ली, भारत

DOI: https://doi.org/10.33545/26649799.2019.v1.i2a.53

सारांश
पत्र मानव सभ्यता के साथ–साथ विकसित प्राचीन कला है। पत्रों का महत्त्व सर्वविदित है। आत्माभिव्यक्ति मानव की प्राकृतिक प्रवृत्ति है। अभिव्यक्ति की चाह तक शांत नहीं होती, जब तक मनुष्य अपने भाव तथा विचारों को किसी के सम्मुख प्रकट नहीं कर देता। अभिव्यक्ति की इच्छा पत्र–लेखन की प्रेरणा है। हिंदी पत्र–लेखन की परंपरा के संकेत–सूत्र प्राचीन काव्य में मिलते हैं। अमीर खुसरो, जायसी, कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीरा, रहीम, घनानंद, बिहारी आदि के काव्य में पत्र–लेखन के संदर्भ आते हैं। पत्र को साहित्य की एक मूल्यवान विधा मानकर प्रकाशित करने और कला रूप का विश्लेषण करने की प्रवृत्ति नवीन है। पत्र विधा का विकास आधुनिक युग में हुआ। हिंदी पत्र–साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत शोध आलेख के विवेचन का आधार है।

मूल शब्दः गद्य विधा, आत्माभिव्यक्ति, पत्र, लेखकीय प्रकृति, व्यक्तित्व व कृतित्व, युगीन परिवेश, सामाजिकता, साहित्यिकता, सोद्देश्यता।

प्रस्तावना

आधुनिक युग के कर्णधार "भारतेंदु हरिश्चंद्र पत्र लेखन कला में कितने जागरूक थे इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने प्रशस्ति संग्रह अथवा 'पत्रबोध' शीर्षक से एक स्वतंत्र पुस्तक ही लिखी थी।"[1] भारतेंदु के पत्रों में यात्रा–वर्णन, रसिकता, आर्थिक संकट अध्ययनशीलता और जिज्ञासा, हिंदी के लिए सतत् चिंता संबंधी दृष्टिकोण का पता चलता है। भारतेंदु के अलग से पत्र प्रकाशित नहीं है। उनके पत्र भारतेंदु ग्रंथावली भाग–3 संपा॰ ब्रजरत्नदास, हरिश्चंद्र – लेखक बाबू शिवनंदन सहाय, भारतेंदु – लेखक – मदनगोपाल तथा भारतेंदु समग्र (संपा॰ हेमन्त शर्मा) पुस्तक में प्रकाशित हैं। भारतेंदु के पत्र तत्कालीन साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के अलावा सर्वश्री दयानंद सरस्वती, बदरीनारायण चौधरी, प्रेमघन, प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्णदास, पं॰ किशोरी लाल गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, माधव प्रसाद सिंह आदि ने भी अत्यंत प्रभावी पत्र लिखें।

हिंदी का प्रथम पत्र–संग्रह आर्य समाजी लेखकों की देन है। "महात्मा मुंशी राम ने सन् 1904 में स्वामी दयानंद सरस्वती संबंधी पत्रों का संकलन किया है। यह हिंदी का सर्वप्रथम प्रकाशित पत्र–संग्रह है।"[2] प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के पत्रों का प्रसिद्ध संकलन 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' 1931 में प्रकाशित हुआ। जवाहरलाल नेहरू ने ये पत्र अपनी पुत्री इंदिरा को लिखे थे। अंग्रेज़ी में लिखे गये इन पत्रों का हिंदी अनुवाद मुंशी प्रेमचंद ने किया। नेहरू जी ने अपने पत्रों में विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, भारतीय इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, प्राणिशास्त्र, प्रकृति आदि विषयों पर व्यापक चर्चा की है। यह पत्र संकलन बहुत लोकप्रिय हुआ।

"हिंदी पत्र–साहित्य के इतिहास में सन् 1954 ई॰ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हिंदी साहित्यकारों के निजी पत्रों के स्वतंत्र संग्रहों का प्रकाशन इसी वर्ष में प्रारंभ हुआ। श्री बैजनाथ सिंह विनोद द्वारा संपादित "द्विवेदी पत्रावली" इस परंपरा की प्रथम कड़ी है।"[3] 'द्विवेदी पत्रावली' द्विवेदी युग की साहित्यिक गतिविधियों और द्विवेदी जी के व्यक्तित्व को समझने में बहुत सहायक है। प्रसिद्ध समालोचक पं॰ पद्म सिंह शर्मा पत्र लेखन में अत्यंत निष्णात थे। उनके पत्रों का संग्रह "पद्मसिंह शर्मा के पत्र" पं॰ बनारसीदास चतुर्वेदी और पं॰ हरिशंकर शर्मा के संपादन में (1956 ई॰) प्रकाशित हुआ। सन् 1958 में श्री बैजनाथ सिंह विनोद द्वारा संपादित "द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र" प्रकाशित हुआ। इसी वर्ष पं॰ किशोरीदास वाजपेयी ने "साहित्यिकों के पत्र" का संपादन किया।

हिंदुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद से उर्दू में प्रकाशित "खुतूतेगालिब" का देवनागरी लिप्यंतर सन् 1958 ई॰ में प्रकाशित हुआ। इस हिंदी संस्करण का संपादन और लिप्यंतर श्रीराम शर्मा ने किया। गालिब के पत्र भाव एवं शैली की दृष्टि से उत्कर्ष, अप्रतिम है। उनमें बातचीत की स्वच्छंद उन्मुक्तता तथा वातावरण की सजीवता सहज व्यक्त हुई है। गालिब के पत्रों में बेतकल्लुफ लहजा है वह किताबी और औपचारिक भाषा से मुक्त है। इस प्रकार "जो जबान पर आए वह क़लम लिखे" इस बात के कायल गालिब के पत्र विषय, शिल्प आदि सभी दृष्टियों से पत्र–साहित्य की अनुपम उपलब्धि हैं।

सन् 1959 ई॰ में "प्राचीन पत्र संग्रह" नाम से डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा और लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा संपादित एक महत्त्वपूर्ण पत्र संकलन प्रयाग विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ। इन पत्रों का लेखनकाल वि॰ सं॰ 1849–1871 (सन् 1793–1820 ई॰) है। ये पत्र मराठा इतिहास से संबद्ध है। सन् 1960 में पं॰ वियोगी हरि द्वारा संपादित पत्र–संग्रह "बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। कवि सुमित्रानंदन पंत के 126 पत्रों का संकलन 1960 में प्रकाशित हुआ। यह संग्रह पंत जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर हरिवंशराय बच्चन द्वारा 1947–60 ई॰ में लिखित निबंध संग्रह "कवियों में सौम्य संत" के परिशिष्ट रूप में है। पंत जी द्वारा बच्चन जी को ये पत्र 1940–60 ई॰ में लिखे गये हैं। ये पत्र नितांत वैयक्तिक है जिनमें पंत जी का स्निग्ध अंतःकरण मुक्तदशा में अभिव्यक्ति हुआ है।

अमृतराय और मदनगोपाल ने (1962) प्रेमचंद के पत्रों का संग्रह "चिट्ठी पत्री" भाग–1 और भाग–2 का संपादन किया। ये पत्र तत्कालीन राजनैतिक और साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की षष्टिपूर्ति के अवसर पर डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह द्वारा "शांति निकेतन से शिवालिक" (1967 ई॰) पुस्तक संपादित की गयी। पुस्तक के अंत में कुछ पत्र संकलित हैं। सन् 1970 में पाण्डेय पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र का "फाइल और प्रोफ़ाइल" पत्र संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें उग्र जी को प्राप्त विभिन्न हिंदी साहित्यकारों के पत्र संकलित हैं। डॉ॰ हरिवंशराय

बच्चन ने "पंत के सौ पत्र बच्चन के नाम" (1970) तथा डॉ॰ जीवन प्रकाश जोशी ने "बच्चन पत्रों में" का संपादन किया। सन् 1971 ई॰ में प्रकाशित पत्र–संग्रहों में जानकीवल्लभ शास्त्री द्वारा संपादित "निराला के पत्र" हरिवंशराय बच्चन द्वारा संपादित "पंत के दो सौ पत्र" और बाबू वृंदावनदास द्वारा संपादित "बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। "निराला के पत्र" में निराला द्वारा जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे गये 109 पत्र संकलित हैं। ये पत्र निराला के जीवन चरित तथा साहित्य अध्ययन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। निराला के पत्र डॉ॰ रामविलास शर्मा की प्रसिद्ध पुस्तक "निराला की साहित्य साधना भाग–3" और डॉ॰ नंदकिशोर नवल द्वारा संपादित "निराला रचनावली" खंड–8 में भी हैं।

श्री निरंकार देव सिंह ने 1972 में "बच्चन के पत्र" तथा बाबू वृंदावनदास ने (1974) डॉ॰ वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र" का संपादन किया। सन् 1976 में दो महत्त्वपूर्ण पत्र–संग्रह प्रकाशित हुए। जयशंकर प्रसाद के सुपुत्र रत्नशंकर प्रसाद और डॉ॰ गिरिशचंद्र त्रिपाठी द्वारा संपादित "प्रसाद के नाम पत्र" तथा प्रसिद्ध आलोचक डॉ॰ रामविलास शर्मा द्वारा संपादित "निराला की साहित्य साधना" खण्ड–3 । इन पत्र संग्रहों में छायावाद की जागरणकालीन अँगड़ाइयों की भंगिमा सहज ही मिलती है। छायावादी युगीन हिंदी संसार के अनेक संकेत सूत्र इन पत्रों में बिखरे हुए हैं।

सन् 1977 में श्री मधुरेश द्वारा संपादित "यशपाल के पत्र" पत्र संग्रह प्रकाश में आया। इन पत्रों में यशपाल जी ने अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी हैं। सन् 1978 में प्रकाशित पत्र–संग्रहों में श्री रमण शांडिल्य द्वारा संपादित "बाबू वृंदानदास के पत्र" उल्लेखनीय है।

सन् 1980 के बाद के हिंदी साहित्य को हम पत्र–साहित्य का उत्कर्षकाल कह सकते हैं। भारतेंदु युग से आरंभ होकर स्वातंत्र्योत्तर काल तक आते–आते पत्र–साहित्य पूर्ण विकसित हो चुका था। आठवें दशक में पत्र–साहित्य स्वतंत्र संकलनों के साथ–साथ साहित्यकारों की रचनावलियों और ग्रंथावलियों में भी संकलित होने लगा। साहित्य के साथ–साथ राजनीति, धर्म, कला इत्यादि क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्तियों के पत्र भी प्रकाशित होने लगे। सन् 1980 में विजयेन्द्र स्नातक के निजी पत्रों का संकलन "अनुभूति के क्षण" नाम से प्रकाशित हुआ। दिनकर शोध संस्थान के संस्थापक श्री कन्हैयालाल फूलफगर ने 1981 में "दिनकर के पत्र" का संपादन किया। ये पत्र महाकवि दिनकर के संघर्षरत, संवेदनशील जीवन की कहानी कहते हैं। सन् 1982 में कुँवर सुरेश सिंह ने छायावाद के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत के पत्रों का संपादन "पंत जी और कालाकाँकर" शीर्षक से किया। इसमें पंत जी के लगभग 300 पत्र कुँवर सुरेश सिंह के नाम लिखे गये हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा श्रीधर पाठक को लिखे पत्रों का संकलन "द्विवेदी जी के पत्र पाठक जी के नाम" से सन् 1982 में प्रकाशित हुआ। इस संकलन की भूमिका अज्ञेय ने लिखी है। डॉ॰ जीवनप्रकाश जोशी ने "अंचल पत्रों में" का संपादन किया।पत्र–साहित्य की शृंखला की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी मुक्तिबोध है। नेमिचंद्र जैन ने मुक्तिबोध के पत्रों का संपादन "पाया पत्र तुम्हारा" शीर्षक से सन् 1984 में किया। मुक्तिबोध का व्यक्तित्व और कृतित्व अनेक अंतसंघर्षों से भरा हुआ है। इसकी छाया मुक्तिबोध के पत्रों में भी देखी जा सकती है। इन पत्रों में मुक्तिबोध के जीवन की भीतरी और बाहरी छटपटाहट के साथ–साथ ही उनकी साहित्य से जुड़ी मान्यताएँ, समस्याएँ भी देखी जा सकती है। सन् 1984 में प्रकाशित होने वाले पत्र–साहित्य की सूची में चंद्रदेव सिंह द्वारा संपादित "बच्चन के विशिष्ट पत्र" तथा रामनारायण उपाध्याय द्वारा संपादित "चिट्ठी–पत्री" प्रमुख है। 1987 में पत्र–साहित्य की पुस्तकों में नरेन्द्र कोहली द्वारा संपादित "नागार्जुन के पत्र" तथा प्रज्ञा रश्मि द्वारा संपादित "बच्चन जी पत्रों के दर्पण में" उल्लेखनीय है। पं॰ झाबरमल्ल शर्मा ने 1989 में "गुलेरी पत्र–साहित्य" का संपादन किया। इन पत्रों से ज्ञात होता है कि गुलेरी जी सिर्फ़ अध्ययनशील पाठक, महान वक्ता, भाषा विद् एवं ग्रंथकार ही नहीं थे, बल्कि एक अच्छे प्रभावशाली पत्र–लेखक भी थे।

आलोचक डॉ॰ रामविलास शर्मा और कवि केदारनाथ अग्रवाल के पत्रों का संग्रह 'मित्र संवाद' शीर्षक से सन् 1992 ई॰ में प्रकाशित हुआ। इसमें सन् 1935 से लेकर सन् 1991 तक का पत्र–व्यवहार प्रकाशित हुआ है। इस तरह इन दोनों दिग्गजों का पत्र–व्यवहार छप्पन वर्षों तक निरंतर चलता है। "इन पत्रों में पारिवारिक परिवेश की, कहीं सामाजिक परिवेश की सबसे अधिक साहित्यिक परिवेश की झलक है।"[4] हम कह सकते हैं कि हिंदी में पत्र–साहित्य तो ढेर हैं, परंतु पत्र–व्यवहार नहीं है। इस अर्थ में 'मित्र–संवाद' के पत्र अद्वितीय है। संभवतः मिर्ज़ा गालिब के पत्रों के बाद हिंदी का दूसरा महत्त्वपूर्ण पत्र संग्रह 'मित्र संवाद' ही है। यह गद्य कला का अनुपम दस्तावेज़ है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और राजकमल प्रकाशन के सहयोग से सन् 1994 में "हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र" (दो खण्डों में) का संपादन डॉ॰ मुकुन्द द्विवेदी ने किया। ये पत्र द्विवेदी जी के जीवन के साक्षात् प्रमाण हैं और उनके साहित्य संघर्ष के प्रतिबिंब भी हैं। इन पत्रों से द्विवेदी जी की साहित्य साधना को समझने में बहुत सहायता मिलती है।

जयदेव तनेजा ने सन् 1995 में "राकेश और परिवेश पत्रों में" का संपादन किया। इसमें मोहन राकेश के अनेक पत्र संकलित हैं। इन पत्रों में राकेश का अत्यंत जटिल व्यक्तित्व अपने समस्त अंतर्विरोधों के साथ विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के साथ उपस्थित होता है। सुधाकर पाण्डेय के संपादन में "उग्र के पत्र" (1996) प्रकाशित हुए। पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र के ये पत्र ऐतिहासिक महत्त्व के हैं। जो उनके आदर्श जीवन, दर्शन, साहित्य, राग–विराग, सुख–दुःख तथा एकान्त के आख्याता हैं। सन् 1996 में डॉ॰ नरेन्द्र कोहली ने अपने नाम लिखे साहित्यकारों, संपादकों और पाठकों के पत्रों का संपादन "प्रतिनाद" शीर्षक से किया।

सन् 1997 में कई महत्त्वपूर्ण पत्र–संग्रह प्रकाशित हुए। साहित्यकारों, स्वतंत्रता सैनानियों के साथ विश्व प्रसिद्ध लेखकों के पत्र भी अनुदित होकर प्रकाश में आये। "तीन महारथियों के पत्र" संपा॰ डॉ॰ रामविलास शर्मा, "मैं पढ़ा जा चुका पत्र" संपा॰ नंदकिशोर नवल, "जेल से लिखे पत्र व लेख" संपा॰ देवेश चंद्र, "इन खतों से खुशबू आती है" संपा॰ शंकरदयाल सिंह, "प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रेम पत्र" संपा॰ वीरेन्द्र गुप्त व विजयचंद "पिता को पत्र" ले. फ्रांत्स काफ़्का अनु. महेशदत्त उल्लेखनीय हैं।

श्रीमती पुष्पा भारती ने अपने पति धर्मवीर भारती के पत्रों का संकलन "अक्षर–अक्षर यज्ञ" शीर्षक से 1999 में किया। इसमें 'धर्मयुग' के संपादक श्री धर्मवीर भारती द्वारा समकालीन साहित्यकारों और मित्रों को लिखे गये पत्रों को संकलित किया गया है। ये पत्र भारती के साहित्य और पत्रकारिता के प्रति समर्पित जीवन के विश्वसनीय दस्तावेज़ है। भारत यायावर ने रेणु जी के पत्रों का एक स्वतंत्र संग्रह "चिठिया हो तो हर कोई बाँचे" नाम से संपादित किया। इस संग्रह में रेणु के पूर्णिया अंचल के लोगों के नाम तथा पूर्णिया के बाहर के लोगों को लिखे पत्र संगृहित हैं।

सन् 1999 में विश्व के दो महान साहित्यकारों के पत्र भी अनूदित होकर हिंदी में प्रकाशित किये गये। नजीरुल हसन अंसारी ने 'गोर्की के पत्र' का अनुवाद किया तथा राइनेर मारिया रिल्के के पत्रों का अनुवाद "रिल्के के प्रतिनिधि पत्र" शीर्षक से कथाकार राजी सेठी ने किया। सन् 2000 में प्रकाशित "कवियों के पत्र" डॉ॰ रामविलास शर्मा के नाम लिखे पत्रों का संकलन है। इसमें मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर,

नरेन्द्र शर्मा, बच्चन, गिरिजाकुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, अज्ञेय तथा प्रभाकर माचवे के पत्र संकलित हैं। ये पत्र हिंदी साहित्य के इतिहास की मूल्यवान धरोहर हैं।

पुनश्चः (मोहन राकेश और अश्क दंपत्ति का पत्राचार) का संपादन प्रसिद्ध नाट्य समीक्षक जयदेव तनेजा ने किया। इन पत्रों में अश्क एवं राकेश के व्यक्तिगत जीवन की उथल–पुथल तथा रचनाशील अंतर्मन और संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है। "हमकों लिख्यौ है कहा" समीक्षक देवीशंकर अवस्थी को लिखे गए पत्रों का संकलन है। संकलन–संपादन उनकी धर्मपत्नी डॉ॰ कमलेश अवस्थी ने किया है। ये पत्र अवस्थी जी के साहित्यिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा शैक्षिक पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। डॉ॰ बिंदु अग्रवाल ने अपने पति श्री भारतभूषण अग्रवाल के पत्रों का संकलन "पत्राचार" शीर्षक से सन् 2001 में प्रकाशित किया। इसमें भारतभूषण अग्रवाल के लिखे हुए पत्रों के साथ–साथ अग्रवाल को लिखे गये पत्रों का भी समावेश किया गया है। "बच्चन के चुने हुए पत्र" का संपादन श्री अजित कुमार ने किया। ये पत्र बच्चन जी के व्यक्तित्व पर रोशनी डालते हैं। साहित्यकार कमलेश्वर के अपनी पत्नी गायत्री के नाम लिखे पत्र "तुम्हारा कमलेश्वर" शीर्षक से प्रकाशित है। इन पत्रों में भारतीय परिवार में एक दंपत्ति के कर्त्तव्यों, ज़रूरतों, परिस्थितियों आदि चिंताओं का खुलासा होता है, साथ ही कमलेश्वर के साहित्यिक विकास का भी पता चलता है। सन् 2000 में "नामवर सिंह के पत्र" का संपादन श्री नारायण पाण्डेय ने किया। पत्र 1954 से शुरू होकर 1997 तक लिखे गए हैं। श्री नारायण पाण्डेय को लिखे इन पत्रों में नामवर सिंह के व्यक्तित्व का दूसरा स्वरूप सामने आता है। परिवार और साहित्य के प्रति गहरा लगाव इन पत्रों की मुख्य विशेषता है। नामवर जी के व्यक्तित्व और आलोचना–दृष्टि को समझने में ये पत्र बहुत सहायक हैं।

फिराक़ गोरखपुरी के पत्रों का संकलन "मनआनम" शीर्षक से 2001 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में "नुकूश" के संपादक मुहम्मद तुफ़ैल और फिराक़ गोरखपुरी की ख़तोकिताब है। डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका ने सन् 2002 में "प्रेमचंद के नाम पत्र" का संपादन किया। प्रेमचंद के जीवन तथा साहित्य के अज्ञात प्रसंगों, संदर्भों तथा सूत्रों को समझने में ये पत्र काफ़ी मदद करते हैं।

"अत्र कुशलं तत्रास्तु" डॉ॰ रामविलास शर्मा तथा अमृतलाल नागर के एक–दूसरे को लिखे गये पत्रों का संकलन है। ये पत्र "मित्र संवाद" के पत्रों की तरह ही मूल्यवान और अद्वितीय हैं। "मित्र संवाद" में एक कवि और आलोचक के बीच पत्र–व्यवहार है। यहाँ पर संवाद एक कथाकार और आलोचक के बीच है। "पं॰ मोहनलाल महतो वियोगी के पत्र" का संपादन डॉ॰ रामशंकर द्विवेदी ने किया। पं॰ मोहनलाल महतो और रामशंकर द्विवेदी की आत्मीयता सहृदयता, सामाजिकता और साहित्यिकता इस पत्र–संकलन को विशिष्ट बनाती है।

'प्रेमचंद पत्रों में' (2005) का संकलन–संपादन मंगलमूर्त्ति ने किया। इन पत्रों में ऐसे अनेक प्रसंगों की रोचक कथा आती है, जिनमें उस पूरे साहित्यिक परिवेश पर एक नयी रोशनी फैलती है, जिसमें प्रेमचंद की महान प्रतिभा विकसित हुई है।

"काशी के नाम" (2006) आलोचक डॉ॰ नामवर सिंह के अपने भाई कथाकार काशीनाथ सिंह को लिखे पत्रों का संग्रह है। पत्र लेखक बड़े भाई डॉ॰ नामवर सिंह हैं। संपादन छोटे भाई काशीनाथ सिंह ने किया है। पिछले पचास वर्षों के साहित्यिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक बहसों के साथ–साथ पारिवारिक जीवन के उतार–चढ़ाव का ब्यौरा भी इन पत्रों में मिलता है। "काशी के नाम" पत्रों में जीवन और साहित्य परस्पर एक–दूसरे के साथ–साथ चलते हैं। ये पत्र दो भाईयों की आत्मीयता, अंतरंगता के साथ–साथ दो साहित्यकारों की साहित्यिक दुनिया की अभिव्यक्ति भी करते हैं।

निर्मल वर्मा की मृत्यु के बाद कवयित्री पत्नी गगन गिल ने निर्मल वर्मा के अपने बड़े भाई चित्रकार रामकुमार वर्मा को लिखे पत्रों का "प्रिय राम" (2006) शीर्षक से संपादन किया। ये पत्र निर्मल वर्मा के साहित्य और स्वयं उन्हें समझने में बहुत सहायक हैं। इन पत्रों में निर्मल वर्मा के जीवन की अनेक छवियाँ दिखलाई पड़ती हैं। पारिवारिक चिंताओं, आर्थिक संकटों को झेलते हुए भी निरंतर सृजन में लगे रहने वाले लेखक के रूप में निर्मल वर्मा इन पत्रों में दिखाई देते हैं। निर्मल वर्मा के गद्य की अपनी रंगत भी इन पत्रों के बीच–बीच में दिखाई देती है।

"चिट्ठियों के दिन" और "देहरी पर पत्र" भी निर्मल वर्मा के लिखे पत्रों के संकलन हैं, जिनका संपादन गगन गिल ने किया। "चिट्ठियों के दिन" में संकलित पत्र लेखक रमेशचंद्र शाह और उनकी पत्नी ज्योत्स्ना मिलन तथा उनकी पुत्रियाँ शंपा शाह और राजुला शाह के नाम हैं। "देहरी पर पत्र" कथाकार युवा लेखक जयशंकर को लिखे गये हैं। भूमिका में पत्र–संपादिका गगन गिल लिखती हैं– "निर्मल को ढेर चिट्ठियाँ आती थीं, हर दिन। लगभग एक थैला भर कर। वह हर पत्र का जवाब देते थे, बाद में जब अति प्रसिद्ध हो गये, तब भी। भले पच्चीस पैसे का पोस्टकार्ड ही भेजें।"[5] प्रस्तुत टिप्पणी से निर्मल वर्मा के गंभीर सजग पत्र–लेखक होने का परिचय मिलता है। इन पत्रों में निर्मल के व्यक्तिगत जीवन के संबंध में भी दुर्लभ संकेत–सूत्र प्राप्त होते हैं, जो उनकी रचनाओं के रहस्यों का उद्घाटन करते हैं। कहीं–कहीं पर पत्रों में व्यक्त निर्मल वर्मा का काव्यात्मक गद्य पाठकों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करता है।

"बनारसीदास चतुर्वेदी के चुनिन्दा पत्र" (खण्ड 1,2) का संपादन 'नवनीत हिंदी डाइजेस्ट' पत्रिका के संपादक रह चुके श्री नारायण दत्त ने किया। बनारसीदास चतुर्वेदी का पत्र–लेखन असाधारण, व्यापक और वैविध्यपूर्ण था। पत्र–लेखन उनकी दिनचर्या का अंग था। एक अनुमान के अनुसार उनके लिखे पत्रों की संख्या लगभग एक लाख के आसपास हो सकती है। उनके पत्र हिंदी और अंग्रेज़ी में लिखे गए हैं। इस पत्र–संकलन के संपादक नारायण दत्त ने बनारसीदास चतुर्वेदी के बृहद पत्रों में से चुनिन्दा पत्रों का संपादन किया है। ये पत्र समकालीन साहित्यकारों, लेखकों, मित्रों, पत्रकारों और साहित्य–प्रेमियों को लिखे गये हैं। इस पत्र–संकलन के फ्लैप पर लिखा है – "ये महज एक साहित्यकार–पत्रकार के पत्र नहीं है, बल्कि पिछली सदी के हिंदी समाज के चिंतन, वैचारिक संघर्ष और संस्कृति के जीवंत दस्तावेज़ हैं।"[6]

"अब वे वहाँ नहीं रहते" (2006) कथाकार संपादक राजेन्द्र यादव द्वारा संपादित एक ऐसी पत्र–पुस्तक है, जिसमें नई कहानी की तिकड़ी मोहन राकेश, कमलेश्वर और स्वयं राजेन्द्र यादव के साथ आलोचक नामवर सिंह के पत्र भी प्रकाशित हैं। पुस्तक की भूमिका – 'मैं और मेरा समय' में राजेन्द्र यादव लेखकीय अंतर्संवादों का जीवंत ब्यौरा प्रस्तुत करते हैं। इन पत्रों में तत्कालीन नयी कहानी के आंदोलन और साहित्य की अंतर्ध्वनियों को सुना जा सकता है।

"मेरे युवजन मेरे परिजन" (2007) ग॰मा॰ मुक्तिबोध के नाम लिखे लगभग पचास कवि–लेखकों के करीब तीन सौ पत्रों का संकलन है। मुक्तिबोध के सुपुत्र रमेश गजानन मुक्तिबोध व अशोक वाजपेयी ने इसका संपादन किया। संकलन का नामकरण मुक्तिबोध की एक कविता से प्रेरित है। पुस्तक के प्रारंभ में मुक्तिबोध के सुपुत्र रमेश मुक्तिबोध द्वारा लिखी गयी भूमिका है, जिससे साफ़ पता चलता है कि कवि मुक्तिबोध पत्रों के प्रति कितने सजग थे। प्रस्तुत पत्रों में मुक्तिबोध के जीवन और लेखन की एक अलग नयी दुनिया अपनी आत्मीयता और विशिष्टता के साथ सामने आती है।

"पत्र ही नहीं, बच्चन मित्र हैं" (2008) का संपादन कवि उद्भ्रांत ने किया। पत्र के विषय में हरिवंशराय बच्चन का मानना था – "व्यक्ति किसी आशा या भावना से ही किसी को पत्र लिखता है, अतः अपने पास आए हर खत का जवाब ज़रूर देना चाहिए।"[7] पुस्तक के पाँच खण्डों में डॉ॰सुमन की भूमिका, उद्भ्रांत के नाम बच्चन जी के पत्र, उन पर व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ, पारिवारिक लेखकीय पत्रों–निबंधों– संस्मरणों, समीक्षाओं को भी शामिल किया गया है।

"रंग अभी गीले हैं" (2009) जाने–माने कवि–समीक्षक मलयज के रमेशचंद्र शाह के नाम लिखे पत्रों का संकलन है। "आठवें दशक की साहित्यिक हलचल को निकट से जानने के साथ–साथ सच्ची और सर्जनात्मक संवेदनशीलता अनुभव करने के लिए इन पत्रों को पढ़ा जाना चाहिए।"[8] इन पत्रों में लेखक का व्यक्तित्व तो है, पर उसका आरोपण कहीं नहीं है मलयज की बेबाक, बेलाग खुली बौद्धिक अभिव्यक्ति इन पत्रों में मिलती है।

"धर्मवीर भारती के पत्र : पुष्पा भारती के नाम" (2009) का संकलन–संपादन उनकी पत्नी पुष्पा भारती ने किया। दिवंगत पति की लेखकीय स्मृति बनाए रखने के लिए उनकी पत्नी पुष्पा भारती ने अपने पति धर्मवीर भारती के नितांत निजी पत्रों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित कर सार्वजनिक बना दिया। इन पत्रों में धर्मवीर भारती का रूमानी–प्रेमिल रूप तथा अध्ययनशील–अध्यापकीय रूप का मोहक संगम मिलता है।

"अश्क के पत्र" (2009) का संपादन मधुरेश ने किया। अश्क का यह पत्र–व्यवहार सन् 1963 से 1995 तक जारी रहता है। अश्क जी के ये पत्र बहुत आत्मीय शैली में लिखे गये हैं, जो उनके व्यक्तित्व और साहित्य की पहचान बनते हैं।

"चिट्ठियाँ रेणु की भाई बिरजू को" कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु के भाई बिरजू को लिखे पत्रों का संकलन है। इन पत्रों का संकलन विद्यासागर गुप्ता ने संपादन प्रयाग शुक्ल व रुचिरा गुप्ता ने किया है। ये पत्र दो व्यक्तियों की परस्पर मित्रता तक सीमित नहीं है, इनमें अपने समय और समाज की हलचलों की गूँज सुनाई देती है। भारत के समाजवादी आंदोलन की झांकियाँ भी यहाँ मिलती है। फणीश्वरनाथ रेणु इन पत्रों में एक साहित्यकार, एक ज़िम्मेदार अभिभावक, एक सच्चे समाजवादी कार्यकर्ता और अंतरंग आत्मीय मित्र के रूप में उपस्थित होते हैं।

"आरंभ की दुनिया" कवि, समीक्षक विनोद भारद्वाज द्वारा संपादित एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें 'आरंभ' पत्रिका के संपादन के समय में लिखे 49 साहित्यकारों के 136 पत्र संगृहित हैं। पत्र–संकलन के आरंभ में संपादक द्वारा लिखी एक छोटी–सी भूमिका है जिसमें पत्रिका के प्रकाशन का इतिहास है। "इन पत्रों का महत्त्व इस दृष्टि से है कि यह लेखकों की आत्मकथा, जीवनी और उनके साहित्यिक सरोकारों के बारे में दुर्लभ सूचनाएँ देते हैं।"[9]

केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा के पत्रों का संकलन "मित्र संवाद" 1992 में प्रकाशित हुआ था। उसमें 147 पत्रों को शामिल करते हुए इसका दूसरा संस्करण 2010 में प्रकाशित हुआ। प्रथम संस्करण में 1991 तक के एक–दूसरे को लिखे पत्र प्रकाशित थे। नये संस्करण में 1999 तक के पत्रों को शामिल कर "मित्र संवाद" को दो खण्डों में प्रकाशित किया गया।

जाने–माने साहित्यकार विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अज्ञेय जन्म शताब्दी वर्ष में अज्ञेय के पत्रों का "अज्ञेय पत्रावली" (2012) शीर्षक से संपादन, प्रकाशन किया। अज्ञेय के ये 343 पत्र विभिन्न साहित्यकारों और लेखकों को लिखे गए हैं। पत्र–संग्रह की भूमिका में संपादक लिखते हैं –"लेखकों के पत्र कई दृष्टियों से पाठक के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। लेखक का स्वभाव, उसकी तत्कालीन मनःस्थिति उसके अन्य लेखकों से संबंध दूसरों की रचनाओं के बारे में उसकी राय, साहित्यिक विवादों के बारे में उसकी प्रतिक्रियाएँ आदि बहुत–सी जानकारियाँ लेखक के पत्रों से हासिल हो जाती है।"[10] अज्ञेय अपने समय के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण लेखक रहे हैं। उनका लिखा प्रत्येक पत्र साहित्यिक धरोहर है। अज्ञेय के इन पत्रों में लेखकीय व्यक्तित्व तथा पत्र–लेखन कला के बारे में बहुत–सी जानकारियाँ मिलती है।

"शैलेश मटियानी के पत्र" (2013) का संपादन डॉ॰ सियाराम तिवारी ने किया। शैलेश मटियानी के ये पत्र उन्हें एक कुशल पत्र–लेखक के रूप में स्थापित करते हैं।

"पत्रों के दर्पण में" (कीर्तिनारायण मिश्र के नाम साहित्यकारों के पत्र) पुस्तक का संपादन डॉ॰ देवेन्द्रनाथ ठाकुर और कीर्तिनारायण मिश्र ने किया। इसमें विभिन्न विधाओं के लेखकों के पत्र संकलित हैं। ये पत्र आत्मीय वार्तालाप और भावनात्मक संप्रेषण के माध्यम हैं।

साहित्यकार सेवाराम यात्री ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संग्रहालय से महत्त्वपूर्ण पत्रों का चयन कर उनका "चिट्ठियों की दुनिया" नाम से संपादन किया। पत्र एक कालखण्ड के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ होते हैं। वे आदमी के बीच की भौतिक दूरियों को दूर कर संवाद स्थापित करने का कार्य करते हैं। म॰ग॰अ॰हि॰वि॰ के कुलपति गिरीश्वर मिश्र इन पत्रों के विषय में लिखते हैं – "इन पत्रों में लेखकों की ज़िंदगी में व्याप्त होती चिंताएँ, आशाएँ, आकांक्षाएँ उजागर होती है।"[11] "चिट्ठियों की दुनिया" (2016) पुस्तक के ये पत्र पुरानी और नयी पीढ़ी दोनों तरह के लेखकों द्वारा एक–दूसरे को लिखे गए हैं। संकलन में लगभग सभी विधाओं के लेखकों के पत्र संकलित हैं।

"विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के नाम साहित्यकारों के पत्र" (खण्ड–1,2) का संपादन अनंतकीर्ति तिवारी ने किया। इस संकलन में दस्तावेज़ पत्रिका के संपादक प्रसिद्ध साहित्यकार विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के नाम दो सौ लेखकों के लगभग एक हज़ार पत्र प्रकाशित हैं। ये पत्र 1970 से 2013 के बीच के अर्थात् 43 वर्षों के हैं। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का पत्र–व्यवहार विपुल है। उनका पत्र–संसार हिंदी तक ही सीमित नही है, वह अनेक भाषाओं और प्रदेश तक फैला है।

कवि उद्भ्रांत ने "पत्र भी इतिहास भी" (2016) का संपादन किया। इसमें हिंदी के लगभग चार सौ लेखकों, संपादकों, पाठकों के पत्र संकलित हैं। पुस्तक के आरंभ में भूमिका के साथ पत्रों पर विस्तार से विचार किया गया है। ये पत्र अपने समय, समाज की सफल, सार्थक अभिव्यक्ति करते हैं।

प्रो॰ शंकरीप्रसाद बसु ने स्वामी विवेकानंद की शिष्या भगिनी निवेदिता के पत्रों का 'लेटर्स ऑफ सिस्टर निवेदिता' का दो खण्डों में संपादन किया था। डॉ॰ रामशंकर द्विवेदी ने उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रों का अनुवाद तथा संपादन "भगिनी निवेदिता के कुछ चुने हुए पत्र" (2018) नाम से किया। भूमिका में संपादक लिखते हैं – "स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण भावधारा को जानने के लिए भगिनी निवेदिता के पत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व है।"[12] इन पत्रों से स्वामी विवेकानंद, भगिनी निवेदिता और तत्कालीन युगबोध को जानने–समझने में मदद मिलती हैं।

"कुछ चिट्ठियाँ कैलाषपति निषाद के नाम" – संपादक, केदारनाथ सिंह, "इस पते पर कुछ चिट्ठियाँ", डॉ॰ सत्यनारायण को साहित्यिक मित्रों, पाठकों द्वारा लिखे पत्र – संपादक, माधव राठौड़, "पत्र–लेखक, आचार्य सेवक वात्स्यायन" – संपा॰ शिव मिश्र, "कोकास परिवार की चिट्ठियाँ" – संपा॰ शरद कोकास, "मुझ पर भरोसा रखना" – विन्सेंट वान गॉग के पत्र भाई थियो के नाम, संपादक राजुला शाह "क्यों तेरा राह गुज़र याद आया" (अपने समकालीनों के साथ पत्र–संवाद) – संपादक नरेन्द्र मोहन इत्यादि पत्र–संकलन भी प्रकाश में आये।

पत्र–विधा के विकास में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं ने काफ़ी महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। श्री नंदकिशोर तिवारी के संपादन में प्रकाशित "चाँद" का पत्र विशेषांक (मई 1928) स्वतंत्रता पूर्व पत्र–साहित्य की झाँकी प्रस्तुत करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पत्र के

स्वरूप एवं विकास का पता हमें "ज्ञानोदय" के पत्रांक (नवंबर 1963) से चलता है। "सम्मेलन पत्रिका" (1982–83) के पत्रांक में हिंदी के अनेक लेखकों के पत्र संगृहीत हैं। "भाषा" (मार्च–अप्रैल 2004) का पत्रांक भी हिंदी पत्र–साहित्य में विशिष्ट योगदान देता है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि पत्र हिंदी गद्य–साहित्य की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण विधा है। साहित्य में इसकी एक ऐतिहासिक परंपरा रही है। चूँकि पत्र का मुख्य उद्देश्य परस्पर संवाद करना है। संवाद की चाह मनुष्य की आदिम जिज्ञासा है। जिसके लिए वह विभिन्न कलाओं और साहित्य की ओर उन्मुख होता है। निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि पत्र की एक ऐतिहासिक परंपरा है। साहित्य की गद्य विधा के रूप में इसका विकास आधुनिक काल में हुआ। सन् 1980 के बाद के हिंदी साहित्य को पत्र–साहित्य का उत्कर्ष काल कह सकते हैं। वह स्वतंत्र संकलनों के साथ–साथ साहित्यकारों की रचनावलियों और ग्रंथावलियों तथा पत्र–पत्रिकाओं के विशेषांकों में भी प्रकाशित होने लगा था। अन्य विधाओं की तरह पत्र का भी साहित्य में ऐतिहासिक योगदान है।

संदर्भ

1. सिंहल, डॉ॰ ओमप्रकाश, आधुनिक हिंदी साहित्य, (1990), पीताम्बर पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली, पृष्ठ–79
2. डॉ॰ नगेन्द्र, संपा॰, हिंदी साहित्य का इतिहास, (1983), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ–523
3. पुंजाणी, डॉ॰ कमल, हिंदी का पत्र–साहित्य, (1983), कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, पृष्ठ–88
4. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, त्रिपाठी, अशोक संपा॰, मित्र संवाद, (1992) परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–14
5. गिल, गगन संपा॰, देहरी पर पत्र, (2010), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–10
6. देखिए – नारायणदत्त संपा॰, बनारसीदास चतुर्वेदी के चुनिन्दा पत्र, खण्ड–1, (2006), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. इंडिया टुडे, 21 मई, 2008, पृष्ठ–54
8. इंडिया टुडे, 16 सितंबर, 2009, पृष्ठ–68
9. इंडिया टुडे, 11 फरवरी, 2009, पृष्ठ–60
10. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद संपा॰, अज्ञेय पत्रावली, (2011), साहित्य अकादमी, दिल्ली, भूमिका, पृष्ठ–5
11. यात्री, से. रा. संपा॰, चिट्ठियों की दुनिया (2016, प्रथम संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, पृष्ठ–6
12. द्विवेदी, रामशंकर, संपा॰ तथा अनुवाद, भगिनी निवेदिता के कुछ चुने हुए पत्र, (2018) सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, पृष्ठ–10